Q. संथाल जनजाति के जीवन पर भौगोलिक पर्यावरण का प्रभाव स्पष्ट कीजिए।

→ संथाल जनजाति के लोग भारत के एक बहुत बड़े भू-भाग पर निवास करती है। यह आदिम जनजाति के लोग छोटानागपुर पठार के संथाल परगना में निवास करते है। कुछ मात्रा में लोग उड़ीसा तथा पश्चिमी बंगाल में फैले हुए है तथा यह भारत की सबसे बड़ी जनजाति है जिनकी आबादी लगभग 35 लाख से भी अधिक है। यह जनजाति संथाल परगना का मूल निवासी होने के कारण इसका नाम संथाल पड़ा है। अब इन लोगों की संख्या बढ़ जाने के कारण ये लोग दूर-2 तक फैल गये है। संथाल लोग कुछ मात्रा में असम के चाय बगान तथा पश्चिमी बंगाल के हुगली क्षेत्र में जूट एवं सूती वस्त्र के कारखानों में श्रमिक के रूप में भी काम करते है। इन लोगों की शारीरिक रचना। बहुत हद तक द्रविड़ लोगों से मिलती-जुलती है। संथाल जाति का कद छोटे से माध्यम, नाक चौड़ी, होंठ मोटे, बाल का

एवं सीधे तथा शरीर मजबूत होता है। संथाल लोग तीर - कमान तथा कुल्हाड़ी का प्रयोग करते हैं।

संथाल जनजाति समान्यतः छोटानागपुर के पठारी भागों में निवास करती है। इस क्षेत्र की सागरतल से समान्य ऊँचाई 300 से 400 मीटर है, इस क्षेत्र में राजमहल की पहाड़ियाँ फैली है। यह जलवायु मॉनसूनी है। यहाँ वर्षा का वार्षिक औसत 150 cm है। ग्रीष्म ऋतु में औसत तापमान 30° सेन्टीग्रेड तथा शीतकाल में 16° सेन्टीग्रेड रहता है। इस क्षेत्र में कई छोटी - बड़ी नदियाँ प्रवाहित होती है। इस क्षेत्र में मानसूनी वनों का विस्तार मिलता है। जहाँ साल, महुआ, कदम, कुसुम, पिपल एवं पलास मिलते हैं। संथाल लोगों के जीवन पर पर्यावरण का बहुत प्रभाव है तथा ये लोग पेड़-पौधों के बीच में समायोजन स्थापित कर लिया है। यहाँ पर जंगली पशुओं में सुअर, हिरण, बनरव, तेंदुए एवं चीते आदि पाये जाते हैं। यह प्रदेश खनिज सम्पदा में विशेष रूप से सम्पन्न है। लौह-अयस्क, कोयला, मैंगनीज, अभ्रक, बॉक्साइट, चूना आदि यहाँ के मुख्य खनिज हैं।

आर्थिक विकास :- संथाल कृषि-प्रधान जनजाति है यहाँ झूमिंग कृषि पद्धति का प्रचलन है। यहाँ वनों को काट कर स्थायी आवासीय बस्तियाँ बसाई गई है। यहाँ ज्वार बाजरा मक्का तथा मोटे अनाज उगाए जाते है। इनके गाँव छोटे होते है जिसमें एक ही वंश या गोत्र के लोग निवास करते है। संथाल लोगो का दूसरा व्यवसाय वनो को काटना है। वनो से प्राप्त लकड़ी स्थानीय बाजार में बेच दी जाती है। तथा कुछ लोग वनों से फल-फूल तथा जंगली औषधियाँ भी एकत्र करते है। ये लोग वनो में सामूहिक रूप से पशुओ का शिकार भी करते है। वर्तमान समय में संथाल लोग कल-कारखानो में काम करने लगे है, तथा चाय के बगानो में सूती वस्त्र के मिलो में श्रमिक के रूप में काम करते है।

भोजन :- संथाल मुख्यत: ज्वार, बाजरा, मक्का की रोटी तथा अण्डा, मुर्गी, बकरी तथा सुअर का माँस खाते है। संथाल लोग चावल से शराब तैयार करते है जिसे पचवाई कहते है संथाल बैल, मुर्गी, सुअर, बकरी, गाय, भेड़ एंव कबूतर का माँस भी खाते है।

वस्त्र :- संथाल मुख्यत: सूती वस्त्र का प्रयोग करते है। पुरूष छोटी-सी धोती लपेटते है

तथा गले में तौलिया डाले रहते है। स्त्रियाँ कमर में थोड़ा सा कपड़ा लपेटती है तथा वक्ष-स्थल को कपड़े से ढक कर रखती है। स्त्रियाँ चाँदी, पीतल एवं फूलों के सुंदर आभूषण पहनती है। स्त्रियों में शरीर पर गोदने गुदवाने की भी प्रथा है।

सामाजिक जीवन :- संथाल लोगो में सामाजिक संगठन बहुत ही व्यवस्थित है। इसमें संयुक्त परिवार प्रथा का प्रचलन है। संथाल लोग अपने बीच में एक मुखिया का चुनाव कर लेते है, जिसे 'माँझी' कहते है। इसका चुनाव मतदान द्वारा किया जाता है। माँझी गाँव का आदरणीय व्यक्ति होता है तथा गाँव के सभी व्यक्ति उनके द्वारा दिया गया आदेश को मानते है। तथा बड़े-2 ग्रामों में पंचायतो की स्थापना भी की गयी है। संथाल लोगो में संयुक्त-परिवार प्रणाली प्रचलित है। फिर भी अनेक परिवार में विवाह के उपरांत लड़के माता-पिता से अलग हो जाते है। संथाल लोग अपने गोत्र में वैवाहिक संबंध स्थापित नहीं करते है। इनमें एक विवाह की प्रथा है, परंतु संतान न होने कि स्थिति में दूसरा विवाह भी कर सकते है। वैवाहिक संबंध माता-पिता तथा अपहरण प्रथा द्वारा निश्चित

किया जाता है।

संथाल जाति के व्यक्तियों को नाचने-गाने का शौक होता है। यहाँ प्रत्येक गाँव में एक नृत्यशाला होती है जिसमें स्त्री-पुरुष तथा युवक-युवतियाँ सामूहिक नृत्य करते हैं। इस जनजाति में कन्हान नाम के उत्सव भी मनाया जाता है जिसमें अविवाहित युवक-युवतियाँ एक साथ नृत्य करते हैं। इसमें विवाह कि निम्न पद्धतियाँ प्रचलित हैं:—

(i) इस प्रथा में वर का पिता कन्या के सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखता है। कन्या पक्ष की स्वीकृति के पश्चात विवाह की तिथि निश्चित कर दी जाती है। इसके बाद वर पक्ष कन्या पक्ष को विवाह के व्यय के लिए कुछ धन देते हैं जिसे लड़की के विवाह पर खर्च किया जाता है।

(ii) संथाल जनजाति में विवाह की दूसरी प्रथा अपहरण की है, जिसमें वर के पिता अपने लड़के से बलपूर्वक किसी कन्या को उठा लाने को कहता है। उसके बाद लड़का अपने कुछ साथियों कि मदद से बलपूर्वक कन्या का अपहरण कर लेता है। बाद में दोनों का विधिवत विवाह कर दिया जाता है।

धर्म एवं संस्कृति :- संथाल की मुख्य भाषा 'मुण्डा' है। इसके अलावे संथाल, बिहारी असमी तथा बंगाली भाषा भी बोलते हैं। संथाल प्रकृति के उपासक होते हैं। तथा सर्वशक्तिमान अलौकिक शक्ति की सत्ता में विश्वास रखते हैं। ये लोग गाँव के बाहर बने मंदिरों में मूर्तियों की अपेक्षा आदिम वनों के वृक्षों की पूजा करते हैं। इनके यहाँ टोटमा का भी प्रचलन है। संथाल देवी-देवताओं को खुश करने के लिए पशुओं की बलि भी देते हैं। संथाल भूत-प्रेत में विश्वास करते हैं। ये लोग जादू-टोना में भी विश्वास करते हैं। 'संथाल' लोग 'मारन बरु' देवता के उपासक होते हैं जिनकी पूजा ये फल-फूल, शराब तथा बलि दे कर करते हैं। संथाल एकांत प्रिय होते हैं तथा किसी की अधिनता स्वीकार करना पसंद नहीं करते हैं। ये एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर चले जाते हैं। तथा वनों में स्वच्छन्द जीवन बिताना अधिक ~~पसंद~~ पसंद करते हैं। समाज में मुखिया तथा पुरोहित का सम्मान किया जाता है। धीरे-2 इनमें सभ्यता तथा संस्कृति का प्रसार हो रहा है। संथाल लोग प्रथा समाज

Scanned by TapScanner

के सम्पर्क में आने के कारण ये सभ्य, शिक्षित तथा प्रगतिशील हो गए है। ये लोग अब बाजारों से प्राप्त होने वाला भोजन खाता है। तथा प्रसाधनों एवं आभूषणों पर ध्यान खर्च करता है। इसके विपरित इन मे एक ऐसा भी वर्ग है जो दूसरे लोगो से बचने के लिए छिपता है।

═══